कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [ ]

विषय संस्कृत साहित्य

परीक्षा का दिन गुरुवार

दिनांक 28/3/19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक, कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(1) (क) अमृतं ।

(ख) सुभाषितं बालादपि गृह्णीयम् ।

(ग) स्वर्णम → काञ्चनम् ।

(घ) मित्रम् → अमित्रम् ।

(2.) (क) मानवा: ।

(ख) शक्तिद्वारवै सर्वे कर्तुं शक्यते

(ग) कर्त्ता → मातापि ।

(घ) विशेषणपदं → यावान् ।

(3.) (क) राम: ।

(ख) पुन: त्रैलोक्यस्य जीवितं प्रत्यागतम् ।

(ग) शीघ्रम् → अङ्गतां

(घ) विशेष्यपदं → स्पर्श: ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(6). अन्वय → माता भूमेः गुरुतमा पिता खात् उच्चतरः तथा मन वातः शीघ्रतरं चिन्ता तृणात् बहुतरी ।

हिन्दी अनुवाद → युधिष्ठिर यक्ष द्वारा कहे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहता है कि माता का स्थान भूमि से भी बड़ा होता है, पिता आकाश से भी ऊँचा होता है। मन वायु से भी तेज होता है तथा चिन्ता तिनके से भी बड़ी होती है।

(5). (क) अपरिमाणोपशमो दारुणो कः ?

(ख) चारुदत्तस्य केन सह संवादः भवति ?

(ग) संस्कृत साहित्ये 'बृहत्त्रयी' इति नाम्ना कति महाकाव्यानि सन्ति ?

(7). (क) उपासते → स्वीकार करना ।

(ख) अपरम् → अन्य ।

(18). (ख) द्रुतविलम्बितम् →

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

लक्षणम् → "द्रुतविलम्बितम् नभौ भरौ" ।

सङ्गति → (i) द्रुतविलम्बित वार्णिक: छन्दोऽस्ति ।

(ii) अस्य छन्दस: प्रत्येकस्मिन् पादे क्रमश: नगण:, भगण:, भगण:, रगणा: च सन्ति ।

(iii) अस्य छन्दस: प्रत्येकस्मिन चरणे द्वादश (12) वर्णा: सन्ति ।

उदाहरणम् →

इतर - पाप - फलानि यथेच्छया = 12 वर्ण:
वितर तानि सहे चतुरानन ।
अरसिकेषु कवित्वनिवेदनम्
शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख ।।

(9) (क) क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ।
= 19 वर्ण:

"शार्दूलविक्रीडितम छन्दस्य" ।

लक्षणम् → "सूर्याश्वैर्यदि म: सजौ सततगा: शार्दूलविक्रीडितम्" ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(20) (क) श्लेष: अलङ्कार →

लक्षणम् → "श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने"।

सङ्गति → अत्र श्लेषालङ्कार जायते। श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधानम् क्रियते, अस्मिन् अलङ्कारे एकस्मिन् अर्थं द्वय अस्ति।

उदाहरणम् →

उच्छलद् भूरि कीलाल: शुशुभेवाहिनीपति

सङ्गति → अस्मिन उदाहरणे श्लेषालङ्कार जायते। अत्र कीलालपदस्य द्वय अर्थं प्रथम कीलालपदस्य जलम् द्वितीय कीलाल-पदस्य रक्तम् अस्ति। श्लेषालङ्कार अभिधानं क्रियते। अत्र श्लेषालङ्कार जायते।

(21) (ख) संसार विषवृक्षस्य द्वे एव रसवत् फले।

"रूपक अलङ्कार"

लक्षणम् → तद्रूपकमभेदो: उपमानोपमेययोः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(22) (क) भगवान् महावीरे ।

(ख) अस्यां मेलायां जैन धर्मावलम्बिनां साधूनां समवायो-ऽपि भवति ।

(ग) विशेषणपदं → "प्राचीन" ।

(घ) कर्तृपदं → जनाः ।

(23) (क) शनैः शनैः सद्गुणास्तु ।

(ख) नरः अभिवादनेन ~~च~~ सर्वत्र सिद्धिं समधिगच्छति ।

(ग) क्रियापदं → अभिवादयन्ति ।

(घ) साम्प्रतं परिवारेषु सद्गुणानां संरक्षणं शिक्षणम् आवश्यकम् अस्ति ।

(26) (क)

	सन्धि विच्छेद	सन्धि का नाम
पावकः	पौ + अकः	एचोऽयवायावः
(ख) विष्णोऽव	विष्णो + अव	एङः पररूपं सन्धि ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(27) (क) होतृ + ऋकारः — सन्धि कृत्वा: होतॄकारः — संधि का नाम: अकः सवर्णे दीर्घ

(ख) गगन + ऊर्ध्वम् — गगनोर्ध्वम् — आद्गुणः

(29) (क) समास अनुरूपम् — समास विग्रह: रूपस्य योग्यम् — समास का नाम: अव्ययीभाव समास

(ख) कुपुरुषः — कुत्सितः पुरुषः — कर्मधारय समास

(30) समास (क) चोराद् भयम — समास कृत्वा: चोरभयम् — समास का नाम: तत्पुरु तत्पुरुष समास

(ख) दशआननानि यस्य सः — दशाननः — बहुव्रीहि समास

(28) (क) सुरेशः शय्याम् अधिशेते ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

"अधिशीङ् स्थासां योगे द्वितीया विभक्ति",

(ख) जटाभिः तापसः प्रतीयते ।

"इत्थंभूतलक्षणे योगे तृतीया विभक्ति",

(ग) अन्नस्य हेतोः वसति ।

"हेतोः योगे षष्ठी विभक्ति" ।

(घ) कटे आस्ते ।

"सप्तमी अधिकरण योगे सप्तमी विभक्ति" ।

(13) क्रियापदं -> भक्षयामि ।

(15) "मुद्राराक्षसम्" नाटके स्त्रीपात्राणां पूर्णतया अभावः ।

"सप्तेषु" अङ्केषु विभक्तमिदं नाटकम् ।

(14) वेदाङ्गेषु षड् सन्ति ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) शिक्षा
(ii) कल्पः
(iii) निरुक्तम्
(iv) व्याकरणम्
(v) छन्दः
(vi) ज्योतिषम्

(i) कल्पः → वेदान्त शब्दानां कल्प शब्दः पूर्ण परिचयः विद्यते ।
कल्प द्विधा विभक्त → (i) श्रौतसूत्राणि
(ii) गृह्यसूत्राणि ।

(ii) व्याकरणम् → व्याकरणम् वेद ज्ञानं शब्दानां ज्ञान पूर्णतया विद्यते ।
व्याकरणम् अतिमहत्त्वपूर्ण अस्ति ।

(iii) निरुक्तम् → शब्दानां ज्ञानं ~~व्युत्प~~ व्युत्पत्ति एवं अर्थविवेचन पूर्णतया विद्यते ।

(7) (क) संस्कृतस्य प्रथमः ऐतिहासिक उपन्यास "शिवराजविजयं" ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ख) "ईश्वरविलास: इति महाकाव्यम् रचनाकार: श्री सीतारामभट्ट पर्वणीकर:" ।

(ग) प: गिरिधरशर्मणा रचियता: कथाया: नाम
(i) कश्चित् कवि:
(ii) पितुरुपदेश: ।

(8) कर्ता → "धनानि" ।

(9) विशेष्य पद → "अलकापुर्या" ।

(10) "चारुदत्तस्य" ।

(12) हिंसनं → अहिंसा: ।

~~(11) इन्दुमति: त्रिलोचनाय कुप्यति~~
(11) इति वाक्य इन्दुमति: त्रिलोचनाय कुप्यति ।

(5) (क) अल्पानामपि वस्तूनां संहति: कार्यसाधिका।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स्पश्लोकमें

हिन्दी अनुवाद → संघटन का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि दो वस्तुओं के संघटन से हम बड़ा कार्य कर सकते है। किसी भी वस्तु का प्रयोग करके हम बड़ा कार्य कर सकते है जैसे तिनको से बनी हुई रस्सी से हम मदमस्त हाथी को भी काबु में कर सकते है।

(ख) स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

~~हिन्दी अनुवाद → यह अवतरण "गीतामृतम" पाठ से लिया गया है। इसमे श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है कि जो प्राणी मुझ विष्णु को सभी प्राणियो मे आत्मस्वरूप देखता है तथा और मुझ में सभी प्राणियो को आत्मस्वरूप देखता है वह मेरे लिए अदृश्य नही है वह मुझको प्रिय है।~~

(ख) हिन्दी अनुवाद → यह अवतरण "गीतामृतम" पाठ से लिया गया है। इसमे बताया गया है कि महापुरुष जो-जो आचरण करता है, सामान्य व्यक्ति उसी का अनुसरण करते है लेकिन वह अपने अनुसरनी जो आदर्श प्रस्तुत करता है। सम्पूर्ण विश्व

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उसी का अनुसरण करता है।

(6) कादम्बर्यां निबद्धा कथा "बृहत्यकताया:" ग्रन्थात् गृहीता।

शुकनास: अमात्य: आसीत्।

(25) (क) विद्यालय के चारो ओर वृक्ष है।
विद्यालयं परित: वृक्षा: सन्ति।

(ख) वह कल जयपुर गया।
स: ह्य: जयपुरं गच्छति स्म।

(ग) मैं असत्य नही बोलता हूँ।
अहं असत्यं न ब्रूते।

(घ) लता और रमेश पुस्तक पढ़े।
लता च रमेश: पुस्तकं पठत: स्म:।

(ङ) छात्र विद्यालये में खेलते है।
छात्रा: विद्यालये क्रीडान्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(२५) (क) वने एकः सिंहः प्रतिवसति स्म ।

(ख) सः बलात् सर्वान् पशून् हन्ति ।

(ग) पशवः मिलित्वा प्रतिदिनम् एकैकमृगस्य क्रमः निर्धारितवन्तः ।

(घ) सिंहः समयातिक्रमेण बुभुक्षितः ।

(ङ) सिंहः कोपाविष्टः भवति ।

(च) शशकः वदति - मार्गे अपरः सिंहः मिलति ।

(छ) शशकः सिंहं कूपे नयति ।

(ज) सिंह कूपमध्ये आत्मनः प्रतिबिम्बं पश्यति ।

(झ) सिंहः चिन्तयति - कूपे अपरसिंहः अवश्यमेव वर्तते ।

(ञ) सिंहः कूपे अपतत् मृतश्च ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-T6/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-16/2019